सुबह की सभा : बदलाव की शुरुआत

अंशिका शर्मा

स्कूल में सुबह की सभा क्यों की जाती है; इसका बच्चों और शिक्षकों के लिए क्या महत्त्व है; स्कूलों में सुबह की सभा का स्वरूप कैसा है; और उसमें क्या अर्थपूर्ण बदलाव किए जा सकते हैं? यह लेख इन सभी सवालों पर रोशनी डालता है। -सं.

पृष्ठभूमि

सुबह की सभा एक ऐसा मंच है जिसमें स्कूल के सभी बच्चे और शिक्षक एक साथ होते हैं। *स्कूली शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023* कहती है, "असेंबली पूरे स्कूल समुदाय को एक साथ लाती है, और विषय क्षेत्रों की सीमाओं से परे जाकर सामूहिक सीखने व काम की सराहना की सुविधा प्रदान करती है। स्कूल असेंबली एकजुटता की सकारात्मक भावनाओं के साथ दिन की शुरुआत या समाप्ति करने का एक आदर्श तरीक़ा है।" – *NCFSE 2023*, Chapter 2, Section 2.1, subsection 2.1.2, page 563)

सुबह की सभा विद्यार्थियों के शैक्षणिक और व्यवहार सम्बन्धी पहलुओं में भी बहुत योगदान दे सकती है। इसलिए इसे एक सतत प्रक्रिया के रूप में देखना चाहिए जिसके लिए योजना और दृष्टि की आवश्यकता होती है। स्कूल की सभा में बदलाव की यह कहानी एक स्कूल के शिक्षकों व मेरे द्वारा किए गए साझा प्रयासों के बारे में है। उस समय मैं नियमित रूप से इस प्राथमिक शाला में जा रही थी। मैंने देखा कि इस स्कूल में मॉर्निंग असेंबली में सिर्फ़ प्रार्थना और राष्ट्रगान ही होता है। मेरे मन में मॉर्निंग असेंबली की छवि फ़र्क़ थी। मेरे स्वयं के स्कूल में मॉर्निंग असेंबली के दौरान बहुत-सी गतिविधियाँ होती थीं, और वह हम बच्चों को अच्छी भी लगती थीं। इसी पर सोचते हुए मैंने असेंबली में बदलाव की कोशिश की। यह सब कैसे हो पाया? इसका विवरण इस लेख में प्रस्तुत है।

चित्र : हीरा धुर्वे

बच्चों में आत्मविश्वास आना शुरू हुआ

चित्र : हीरा धुर्वे

इस बदलाव की शुरुआत पहली कक्षा के बच्चों के साथ हुई। पहली कक्षा में बच्चों के साथ मैं बहुत-सी कविताओं और कहानियों पर काम कर रही थी। बच्चों को यह याद भी हो गई थीं। मैंने इन कविताओं और कहानियों को सुनाने के लिए कुछ विद्यार्थियों को कक्षा में ही बुलाकर शुरुआत की। धीरे-धीरे विद्यार्थियों ने पूरी कक्षा के सामने आगे आने और अपनी प्रस्तुति देने के लिए स्वेच्छा से हाथ उठाना शुरू कर दिया। इस प्रक्रिया ने उन्हें आत्मविश्वास और अपनेपन की भावना हासिल करने में मदद की। इससे आख़िरकार उन्हें अपनी कक्षा में सुबह के पाठ का स्वामित्व लेने में मदद मिली। हालाँकि अभी बच्चे कक्षा में ही प्रस्तुति दे रहे थे। अब विद्यालय की सुबह की सभा में प्रस्तुति के लिए उन्हें तैयार करना था, और इस प्रस्तुति की सभा में जगह भी बनानी थी।

कक्षा से विद्यालय तक

स्कूल स्तर पर कुछ भी लागू करने से पहले प्रधानाध्यापक की अनुमति लेना ज़रूरी था। प्रोटोकॉल का पालन करते हुए, मैंने सुबह की सभा के लिए अपनी योजना और डोमेन-विशिष्ट गतिविधियाँ प्रधानाध्यापक के समक्ष प्रस्तुत कीं। ये गतिविधियाँ बच्चों के सर्वांगीण विकास को बढ़ावा देने के लिए डिज़ाइन की गई थीं। उदाहरण के लिए, भाषा विकास के लिए कहानी और कविता सुनाना, सामाजिक और भावनात्मक विकास के लिए गाँव की विभिन्न ख़बरें सुनाना, आदि। प्रधानाध्यापक ने इस क़दम में एक महत्त्वपूर्ण सहायक की भूमिका अदा की, और इस पहल के लिए अनुमति दे दी। फिर मैंने एक दिन पहली कक्षा के एक विद्यार्थी को सुबह की सभा के दौरान कविता प्रस्तुत करने के लिए कहा। वह आगे आया, और उसने अपनी पसन्दीदा कविता, 'Peel Banana' प्रस्तुत की। यह पहली बार था जब सुबह की सभा में सामान्य प्रार्थना और राष्ट्रगान के अलावा कुछ और भी शामिल किया गया। बच्चों और कुछ शिक्षकों को यह बदलाव अच्छा भी लगा। लेकिन स्कूल के एक शिक्षक को यह अच्छा नहीं लगा, और उन्होंने मुझे स्थापित प्रक्रियाओं में हस्तक्षेप न करने की सलाह दी। इसके बाद मैंने शिक्षक के साथ सुबह की सभा के महत्त्व के बारे में बातचीत की। मैंने सभा में की जाने वाली गतिविधियों की एक रूपरेखा तैयार की, और इसे सभी शिक्षकों के साथ साझा किया। इससे बदलाव को सुविधाजनक बनाने में मदद मिली। इन गतिविधियों की सूची इस प्रकार है :

'आज का सुविचार' : इसमें बच्चे अपने मन की बात, घर पर सुनी गई कहावत, आदि को अपनी भाषा में पूरे समूह के सामने प्रस्तुत करते थे। इससे बच्चों में भाषाई विकास के साथ-साथ बोलने का आत्मविश्वास भी विकसित हुआ।

'गाँव की ताज़ा ख़बर' : बच्चे अपने गाँव या आसपास घटित महत्त्वपूर्ण घटनाओं को सुबह की सभा में साझा करने लगे।

इसी प्रकार, अन्य गतिविधियों (जैसे– किताब या किसी फ़िल्म पर चर्चा करना, पपेट्री

(कठपुतली का खेल) करना, कहानी सुनाना, रोलप्ले, कविता गायन, चुटकुले सुनाना, कलात्मक कार्य का प्रस्तुतीकरण, स्कूल से सम्बन्धित निर्देशों को देना, आदि) को भी प्रातःकालीन सभा में शामिल किया गया।

बदलाव की डगर

अब स्कूल की सुबह की सभाओं में अन्य प्रस्तुतियाँ भी होने लगी थीं। समय मिलने पर कक्षा में बच्चों के साथ प्रभावी बातचीत और दोपहर के भोजन के समय अन्य विद्यार्थियों के साथ बातचीत के माध्यम से, मुझे उनकी ज़रूरतों के बारे में बेहतर समझ हो पाई। एक दिन अपूर्व मेरे पास आया और बोला, "दीदी, क्या आप जानती हैं आज क्या हुआ? उस घर में कोई ख़त्म हो गया।"

उस पल, मेरे दिमाग़ में यह ख़्याल आया कि इस तरह की ख़बरें भी सुबह की सभा के दौरान साझा की जा सकती हैं। मैंने अपूर्व से पूछा कि क्या वह इसे प्रस्तुत करने को इच्छुक है। शुरू में तो वह चिन्तित और तनावग्रस्त था, लेकिन शिक्षक से अनुमति मिलने के बाद अपूर्व ने सभा के दौरान स्थानीय समुदाय की ख़बरें साझा कीं।

अब सुबह की सभा में होने वाली गतिविधियों में बच्चों की भागीदारी बेहतरीन ढंग से हो रही थी। मुझे एहसास हुआ कि अब असेंबली को एक संरचित दिशा में मोड़ने का समय आ गया है।

सुबह की सभाओं का चैनलाइजेशन कैसे हुआ?

जैसे-जैसे सभा में अभ्यास, तुकबन्दी, गीत और स्थानीय समाचार जैसी गतिविधियाँ होने लगीं, यह सुनिश्चित करना आवश्यक हो गया कि प्रत्येक विद्यार्थी को बोलने और प्रदर्शन करने का मौक़ा मिले। सभी विद्यार्थियों को मौक़ा मिल पाए, इसलिए प्रत्येक सोमवार को असेंबली का समय बढ़ाया गया। आगामी सभाओं में कौन-सी गतिविधियाँ होंगी; उन्हें कौन करेगा; और वह किस कक्षा से होंगी; यह तय करने के लिए पूरे स्कूल के विद्यार्थियों की कक्षावार मण्डलियाँ भी बनाई गईं। इस तरह सुबह की सभा में सभी बच्चों को उचित मौक़े मिलने सुनिश्चित हो पाए। इन मण्डलियों ने शिक्षकों के साथ मिलकर यह निर्णय लिया कि प्रत्येक कक्षा से विद्यार्थियों को रोटेशन के आधार पर प्रार्थना, व्यायाम, योग-ध्यान और राष्ट्रगान का नेतृत्व करने देने के मौक़े मिलें। एक साप्ताहिक सारिणी बनाई गई जिसमें यह जानकारी शामिल थी– सभा को कौन-सी कक्षा के व कौन विद्यार्थी संचालित करेंगे; अन्य कक्षा के कौन-से विद्यार्थी प्रस्तुतियाँ देंगे; और इन प्रस्तुतियों के विषय क्या होंगे। चूँकि यह एक मिडिल स्कूल था, इसलिए एक सप्ताह में 6 अलग-अलग कक्षाओं के विद्यार्थी ही सभा संचालित कर पाते थे। उसके बाद अन्य कक्षाओं को दूसरे सप्ताह संचालन की ज़िम्मेदारी

चित्र : हीरा धुर्वे

मिलती थी। उदाहरण के लिए, सोमवार को स्कूल असेंबली समूह द्वारा व्यायाम का नेतृत्व किया जाएगा, उसके बाद प्रार्थना और कक्षा 1 के सूरज द्वारा एक कविता पाठ किया जाएगा। मंगलवार को स्कूल असेंबली समूह एक ध्यान सत्र आयोजित करेगा, उसके बाद प्रार्थना और एक स्थानीय पाठ होगा। कक्षा 6 से अपूर्व द्वारा समाचार साझा करने की गतिविधि, और साथ ही कक्षा चार की एक छात्रा द्वारा गीत गायन किया जाएगा।

सभाओं की विषयवस्तु तय करने की ज़िम्मेदारी विद्यार्थियों को सौंपी गई। इस दृष्टिकोण ने बच्चों को अपनी सभाओं का स्वामित्व लेने, और शिक्षक की ग़ैर-मौजूदगी में भी इन गतिविधियों की निरन्तरता सुनिश्चित करने की ज़िम्मेदारी दी। स्वामित्व की इस भावना ने अपनेपन की भावना को बढ़ावा दिया 'विद्यार्थियों का, विद्यार्थियों द्वारा, और विद्यार्थियों के लिए।' इन सभी गतिविधियों का रिकॉर्ड रखा गया।

रिकॉर्ड रखने से इस बात की महत्त्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई कि कितने विद्यार्थियों ने सभा में कितनी बार भाग लिया। इससे यह पहचानने में मदद मिली कि किन विद्यार्थियों को अभी तक भाग लेने का अवसर नहीं मिला है, और अगले सप्ताह किसे मौक़ा दिया जाना चाहिए? वर्तमान में स्कूल में असेंबली को और रोचक बनाने का काम चल रहा है। बच्चे अब प्रार्थना में आनन्द के साथ प्रतिभाग करने लगे हैं।

यह भी महसूस किया मैंने कि असेंबली हर कक्षा के विद्यार्थियों को मेरे पास आने, और अपने जीवन व उन गतिविधियों के बारे में अपने विचार साझा करने के लिए प्रोत्साहित करती थी जिनमें वे असेंबली के दौरान भाग लेना चाहते थे। सुबह की सभा जैसी इन छोटी पहलों की बदौलत मैंने हर गुज़रते दिन के साथ बच्चों के आत्मविश्वास में उल्लेखनीय वृद्धि और समग्र सुधार देखा।

अन्त में

शुरुआत में कुछ चुनौतियाँ आईं, लेकिन बदलाव हुआ। इस बदलाव में लगभग 6 महीने लगे। आज स्कूल की सभा में कई बच्चे भाग ले रहे हैं। शिक्षक और बच्चे नई गतिविधियाँ सुझाते हैं, और उन्हें सभा में शामिल भी करते हैं।

अंशिका शर्मा ने डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर किया है। किताबें पढ़ने में उनकी विशेष रुचि है। 2023 में अंशिका सागर में एसोसिएट रिसोर्स पर्सन के रूप में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के साथ जुड़ीं। वर्तमान में वे सागर ज़िले के राहतगढ़ ब्लॉक में कार्यरत हैं।

सम्पर्क : anshika.sharma@azimpremjifoundation.org